सरदार पटेल

सरदार पटेल

सत्यकाम विद्यालंकार

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य : ₹ 25/- (पचीस रुपये)

संस्करण : 2011
© प्रकाशक
ISBN : 978-81-7483-039-5
SARDAR PATEL (Biography) by Satyakam Vidyalankar
Printed at Compact Printers, Delhi

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली—110 006

क्रम

जन्म से विद्रोही	5
नटखट वल्लभ	6
निर्भय और साहसी	8
कॉलेज की शिक्षा	10
राजनीति में प्रवेश	11
बैरिस्टरी का त्याग	13
बोरसद सत्याग्रह	14
नागपुर झंडा सत्याग्रह	16
बारदोली सत्याग्रह	18
जेलयात्रा	21
राष्ट्रपति वल्लभभाई	23
महाक्रान्ति	25
28	जूनागढ़ का प्रश्न
30	हैदराबाद की उलझन
31	मुसलमानों को चेतावनी
33	रामराज्य की स्थापना
34	मैं सच्चाई नहीं छोड़ूँगा
36	पचपन करोड़ का प्रश्न
36	मजदूर और व्यवसाय
38	हड़तालों में बरबादी
39	मैं गरीबों का दोस्त हूँ
41	पाकिस्तान को चुनौती
43	गाँधीजी के पश्चात्

जन्म से विद्रोही

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्तूबर, 1885 ई. को गुजरात के करमसद गाँव में हुआ था। उनके पिता झवेरभाई पटेल की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। खेती से ही गुज़र होती थी; वह भी दूसरे के खेतों से। कुछ अपनी ज़मीन भी थी। आर्थिक स्थिति साधारण होते हुए भी झवेरभाई बहादुर थे और पक्के देशभक्त।

सन् 1857 के विद्रोह में आप झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई की फौज में भर्ती होकर अंग्रेज़ों और उनके हिन्दुस्तानी हिमायतियों से लड़े थे। इन्दौर के महाराजा ने आपको गिरफ्तार भी किया था, किन्तु अपनी चतुराई से आपका छुटकारा हो गया था।

यह बात प्रसिद्ध है कि एक दिन इन्दौर के महाराजा अपने महल के उस कमरे के करीब ही शतरंज खेल रहे थे, जिसमें आप नज़रबन्द थे। आप सींखचों के भीतर से महाराजा की चालें देख रहे थे। शतरंज का आपको बहुत शौक था। आपने देखा कि महाराजा जिस चाल से चल रहे थे वह उन्हें अवश्य मात दे देगी। इसलिए आपने महाराजा को वह चाल चलने से रोका और दूसरी चाल बताई। महाराजा ने झवेरभाई

की बात मान ली और खेल में जीत गए। इस घटना से आपकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। जेल से छुटकारा मिल गया। जेल से छूटकर आप अपने गाँव की ज़मीन पर आ गए और फिर खेती करने लगे।

झवेरभाई के दो पुत्र हुए। बड़े पुत्र का नाम विट्ठलभाई और छोटे पुत्र का वल्लभभाई था। विट्ठलभाई भी वल्लभभाई की तरह योग्य और बहादुर थे। असेम्बली में प्रधान की हैसियत से आपने जिस प्रतिभा का परिचय दिया था, वह आश्चर्यजनक था। दोनों भाइयों को निर्भयता और युद्धप्रियता के गुण पिता से उत्तराधिकार में मिले थे।

वल्लभभाई का बचपन माँ-बाप की देखरेख में गाँव में ही बीता और वहीं पर उनको प्रारम्भिक शिक्षा दी गई। बाद में वे नडियाद गए और वहाँ की शिक्षा समाप्त कर बड़ौदा पहुँचे। बड़ौदा स्कूल में उनकी एक शिक्षक से कुछ कहा-सुनी हो गई, जिसके फलस्वरूप वे स्कूल से निकाल दिए गए। बाद में पुनः नडियाद जाकर वहीं से उन्होंने मैट्रिक पास किया।

नटखट वल्लभ

वल्लभभाई के बचपन की दो-एक बातें मनोरंजक हैं। विद्यार्थी-जीवन में भी वल्लभभाई विद्यार्थियों के नेता थे। नडियाद के जिस स्कूल में वल्लभभाई पढ़ते थे, वहीं के एक

शिक्षक पुस्तकों का व्यापार भी करते थे और लड़कों को मजबूर करते थे कि वे पुस्तकें उन्हीं की दुकान से लें। वल्लभभाई को यह बात अच्छी न लगी। उन्होंने विद्यार्थियों को उकसाया कि कोई भी लड़का उनके यहाँ से पुस्तकें मोल न ले। लड़के बड़े उत्तेजित हुए और उन्होंने हड़ताल कर दी। एक सप्ताह स्कूल बन्द रहा। आखिर मास्टर साहब को झुकना पड़ा और हड़ताल खत्म हुई।

इसी तरह वल्लभभाई जब दसवें दर्जे में पढ़ते थे तब की एक घटना है। पहले उन्होंने संस्कृत ले रखी थी, बाद में उसमें कठिनाई पड़ने पर उन्होंने गुजराती ले ली। गुजराती के शिक्षक स्वयं संस्कृत के प्रेमी थे और जो लड़के संस्कृत नहीं पढ़ते थे, उनसे अप्रसन्न रहते थे। वल्लभभाई जब पहली बार उनकी कक्षा में पहुँचे, तो मास्टर साहब ने उनसे व्यंग्यपूर्वक कहा—"पधारिए महापुरुष!"

उन्हें क्या पता था कि उनकी वाणी एक दिन सत्य होकर रहेगी।

मास्टर साहब ने फिर कहा—"संस्कृत छोड़कर गुजराती लेना तुम जैसे होनहार लड़के को शोभा नहीं देता।"

"पर मास्टर साहब! यदि हम सबने संस्कृत ही ले ली होती तो आप क्या करते?" वल्लभभाई ने प्रश्न किया।

"शैतान कहीं का!" अध्यापक ने कहा और बेंच पर खड़े होने का हुक्म दिया।

अब गुरु-शिष्य में खुली टक्कर होने लगी। मास्टर

साहब रोज़ वल्लभभाई को घर के कामों में पहाड़ा लिख लाने को देते। दसवें दर्जे के किसी भी स्वाभिमानी विद्यार्थी के लिए यह अपमानजनक था। वल्लभभाई ने अपमान का बदला लेने की ठान ली।

पहाड़े को गुजराती में 'पाड़े' कहते हैं और भैंस के बच्चे को भी 'पाड़े' कहते हैं। एक दिन वल्लभभाई से मास्टर ने पूछा—"अरे, तुम पाड़े लाए?"

वल्लभभाई ने अपने स्वाभाविक विनोद के साथ उत्तर दिया—"मास्टर साहब! पाड़े लाया तो था, पर स्कूल के दरवाज़े पर उनमें से दो भड़क पड़े और उनके भड़कते ही सारे भाग गए।"

मास्टर साहब गुस्से से लाल हो गए। इसकी रिपोर्ट उन्होंने हेडमास्टर साहब के पास भेजी। हेडमास्टर ने वल्लभभाई को अपने पास बुलाया और पूछा। बाद में बिना कोई दण्ड दिए उन्हें यह कहकर छोड़ दिया —"ऐसा लड़का मैंने अभी तक नहीं देखा।"

निर्भय और साहसी

वल्लभभाई में डर का नाम-निशान नहीं था। वे बचपन से ही निडर थे। जब छोटे थे तो एक बार बीमार हुए। काँख में एक फोड़ा निकला। गाँव वालों ने दवा बताई और

कहा—"लोहा गर्म करके फोड़े में भोंक दो।" वल्लभभाई तैयार हो गए। लोहे की सलाख गर्म थी। भोंकनेवाला एक ओर वल्लभ जैसे कोमल लड़के को और दूसरी ओर लोहे की गरम सलाख को देखकर हिचकिचाया। वल्लभभाई झुँझला उठे—"जल्दी भोंको, क्या देख रहे हो? लोहा ठंडा हो जाएगा। यदि तुम से नहीं होता तो लाओ, मैं अपने ही हाथों से भोंक लूँ।" यह कहकर उन्होंने गरम सलाख से घाव को दाग दिया और उफ तक न की।

खतरों से खेलना आपको सदा प्रिय रहा। एक बार आपने कहा था, "मेरे साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता। मैं किसी ऐसे काम में नहीं पड़ता जिसमें खतरा न हो, जो लोग आपत्तियों को निमन्त्रण दें उनकी सहायता के लिए मैं स्वयं तैयार हूँ।"

"वल्लभभाई बरफ से ढके ज्वालामुखी के समान थे"—स्वर्गीय मौलाना शौकत अली ने भी एक बार यही कहा था। बरफ से ढके हों या नहीं, किन्तु ज्वालामुखी वे अवश्य थे। उनके हृदय में सदा एक आग जला करती थी, ऐसी आग जो एक ही बार में सहस्रों को भस्म करने की क्षमता रखती हो। उसी आग से उनका खून हमेशा उबला करता था, भुजाएँ फड़कती रहती थीं, और वाणी सदा आग उगलने के लिए तैयार बैठी रहती थी।

कॉलेज की शिक्षा

कॉलेज की शिक्षा का खर्च उठाने की हैसियत इनके माता-पिता की नहीं थी। वल्लभभाई की भी कॉलेज की शिक्षा की ओर विशेष रुचि नहीं थी। ये विलायत जाकर बैरिस्टर बनने का स्वप्न देख रहे थे। पर धन तो पास था नहीं। अन्त में वल्लभभाई ने एक तरकीब सोची। उन्होंने मुख्तारी की परीक्षा पास की और गोधरा में मुख्तार हो गए। मुख्तार वकील ही होते थे परन्तु इनका काम और रुतबा उनसे कम होता था। वहाँ इनकी प्रैक्टिस खूब चली।

दिन-रात एक करके इन्होंने कुछ पूँजी एकत्र कर ली और एक कम्पनी से विलायत जाने के लिए बातचीत करने लगे। इसी बीच कम्पनी का एक पत्र कहीं से इनके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल के हाथ लग गया। बड़े भाई ने कहा—"पहले मुझे जाने दो, मेरे लौटने पर तुम हो आना।" वल्लभभाई मान गए। फलतः उसके पन्द्रह दिन बाद ही विट्ठलभाई बैरिस्टरी पढ़ने विलायत चले गए। तीन वर्ष बाद जब वह लौटे तो वल्लभभाई गए और वहाँ से प्रथम श्रेणी में बैरिस्टरी पास करके लौट आए। उधर वकालत करने के साथ ही विट्ठलभाई राजनीति में भी भाग लेने लग गए थे, अतः उन्होंने वल्लभभाई से कहा—"तुम कुटुम्ब का पालन-पोषण करो, मैं देश-सेवा में भाग लेता हूँ।" ऐसा ही हुआ। वल्लभभाई ने यह राय सहर्ष स्वीकार कर ली।

राजनीति में प्रवेश

परन्तु ज्यों-ज्यों गुजरात की राजनीति में गांधी जी का प्रवेश होने लगा, वल्लभभाई की विचारधारा भी बदलने लगी। इसी बीच गोधरा में गांधीजी की अध्यक्षता में प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन हुआ, जिसमें वल्लभभाई राजनीतिक कार्यों की उपसमिति के मन्त्री बनाए गए। उन्होंने बड़े उत्साह के साथ काम किया और शीघ्र ही अपनी सेवाओं के लिए गुजरात-भर में प्रसिद्ध हो गए।

सबसे पहला काम आपने गुजरात में बेगार बन्द करवाने का किया। पहले कमिश्नर को पत्र लिखा गया। कमिश्नर का पत्र न आने पर यह चेतावनी दी गई कि सात दिन के अन्दर बेगार बन्द न हुई तो जनता को सत्याग्रह करने के लिए कहा जाएगा। इस पर कमिश्नर ने वल्लभभाई को सलाह-मशवरे के

लिए बुलाया। बेगार प्रथा बन्द की गई। सार्वजनिक जीवन में वल्लभभाई की यह पहली विजय थी।

गांधीजी से आपका परिचय बढ़ता गया। पहले-पहल आपको गांधीजी की रीति-नीति के प्रति विशेष आकर्षण नहीं हुआ। अहिंसा और सत्याग्रह दोनों कमज़ोर आदमी के हथियार प्रतीत हुए। किन्तु जब अहमदाबाद में मज़दूरों को गांधीजी ने विजय दिलवाई, और गांधीजी के आत्मबल का आपको परिचय मिला, तब आप गांधीजी के मित्र बन गए। आपका झुकाव भी राजनीति की ओर होने लगा।

उस वर्ष खेड़ा ज़िले की फसल खराब हो गई थी। किसानों के पास लगान अदा करने योग्य पैसा नहीं था। किसानों ने सरकार से फरियाद की। सरकार ने उस पर ध्यान नहीं दिया। लगान की एक-एक पाई वसूल करने की धमकी दी। किसान गांधीजी की शरण में आए। गांधीजी ने जाँच-पड़ताल के बाद खेड़ा के किसानों के पक्ष में सरकार से लड़ने का निश्चय किया।

अहमदाबाद के मित्रों से गांधीजी ने इस बात की चर्चा की और पूछा—"आपमें से कौन मेरे साथ खेड़ा चलेगा और मेरा सहायक होगा?" वल्लभभाई ने तुरन्त अपना नाम लिखा दिया। खेड़ा के किसानों को सत्याग्रह के लिए तैयार करने के लिए वल्लभभाई ने स्वयं गाँवों का परिभ्रमण किया। किसी को स्वप्न में भी ध्यान न था कि अहमदाबाद का सर्वश्रेष्ठ बैरिस्टर गाँव के कंटीले रास्तों पर पैदल घूम-घूमकर किसानों से बात

करेगा। वल्लभभाई का यह स्वभाव बचपन से था कि या तो वे काम को हाथ में लेते नहीं थे, यदि लेते थे तो पूरी तरह निभाते थे। उनके दिन-रात भ्रमण का ही यह परिणाम था कि खेड़ा के किसान कमर कसकर लगानबन्दी के सत्याग्रह के लिए तैयार हो गए। किसानों की दृढ़ता देखकर सरकार को झुकना पड़ा। लगान माफ कर दिया गया। गांधीजी के सत्याग्रह का चमत्कार देखकर वल्लभभाई गांधीजी के शिष्य बन गए। इस घटना के बाद गांधीजी ने वल्लभभाई को अपना ऐसा विश्वासी मित्र पाया जिसने जीवन-भर उनका साथ दिया।

बैरिस्टरी का त्याग

पहले महायुद्ध के बाद रोलेट-एक्ट का विरोध करने के लिए गांधीजी ने देशव्यापी हड़ताल की घोषणा की थी। 4 मार्च, 1914 को देश ने नए युग में प्रवेश किया। अहमदाबाद में वल्लभभाई ने हड़ताल को इतना सफल बनाया कि सरकार डर गई। जुलूस का गोलियों से सत्कार किया गया। 1920 में कांग्रेस ने असहयोग का प्रस्ताव पास किया। वल्लभभाई ने बैरिस्टरी का ही परित्याग नहीं किया, वरन् अपने लड़कों को भी विलायत जाने से रोक दिया। इससे पूर्व आप उन्हें ऊँची शिक्षा के लिए विलायत भेजने की तैयारी कर चुके थे।

गांधीजी के गिरफ्तार होने के बाद गुजरात के नेतृत्व का

भार आपके ही कन्धों पर पड़ा। आपने इस काम को बड़ी सफलता से निभाया। असहयोग में स्कूलों व कॉलिजों से बाहर आए विद्यार्थियों के लिए आपने 'गुजरात विद्यापीठ' की स्थापना की। विद्यापीठ के लिए धन-संग्रह का काम भी किया। सार्वजनिक कार्यों के लिए धन एकत्र करने का आपका यह पहला अनुभव था। इस कार्य के लिए आपको म्यांमार (बर्मा) भी जाना पड़ा। गुजरात विद्यापीठ ने राष्ट्रीय निर्माण में देश की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की हैं।

बोरसद सत्याग्रह

सन् 1922 में आपको सरकार से एक और टक्कर लेनी पड़ी। बोरसद गुजरात का एक ताल्लुका है। ताल्लुके के किसानों पर सरकार ने इतना लगान बढ़ा दिया था कि जनता में त्राहि-त्राहि मच गई। बात यह थी कि इन दिनों बोरसद में देवर बाबा नाम के एक डाकू ने किसानों व ज़मींदारों में आतंक फैलाया हुआ था। उस डाकू से मुकाबला करने के लिए सरकार ने पुलिस के सिपाही तैनात किए थे। वे सिपाही अपने काम में कामयाब नहीं हुए। तब सरकार ने एक और मुस्लिम डाकू को अपने पक्ष में लेकर देवर बाबा को गिरफ्तार करने की तजवीज़ की। बोरसद में एक ही जगह दो डाकू हो गए। मुस्लिम डाकू ने भी जनता को लूटना शुरू कर दिया।

उन डाकुओं के साथ पुलिस वाले भी शामिल हो जाते थे।

लोग इतने डर गए थे कि शाम होते ही घरों के दरवाज़े बन्द कर लेते थे। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था कि गाँवों में डाका न पड़े या खून-खराबा न होता हो। गाँवों में हाहाकार मचने लगा। सरकार पर लोगों का विश्वास नहीं रहा। तब लोग वल्लभभाई के पास पहुँचे। उन्हें अपनी मुसीबतों की कहानी सुनाई। वल्लभभाई स्वयं बोरसद गए और जाँच-पड़ताल की।

इस बीच सरकार ने सिपाहियों पर आए खर्च को वसूल करने के लिए किसानों पर नया कर लगा दिया। वल्लभभाई ने किसानों को यह नया कर अदा करने से रोका और डाकुओं से मुकाबला करने के लिए गाँववालों को स्वयंसेवक दल बनाने का आदेश दिया। पुलिस की ज़रूरत ही नहीं रही। 200 स्वयंसेवक गाँववालों की रक्षा के लिए तैयार हो गए। स्वयंसेवकों की पहरेदारी शुरू होते ही डाके बन्द हो गए। बम्बई सरकार ने किसानों को बहुत डराया-धमकाया, नया कर लेने की कोशिशें कीं, किन्तु वल्लभभाई के सामने उसकी एक न चली। आखिर सरकार को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा। वल्लभभाई की विजय हुई। बोरसद की इस विजय ने वल्लभभाई का नाम देश-भर में प्रसिद्ध कर दिया।

नागपुर झंडा सत्याग्रह

इसके बाद आपने नागपुर झण्डा सत्याग्रह का नेतृत्व किया। नागपुर की पुलिस ने लोगों को शहर के एक हिस्से में राष्ट्रीय झण्डा लेकर निकलने की मनाही की थी। नागपुर कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने इस सरकारी आज्ञा के विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय किया। प्रसिद्ध गांधीवादी सेठ जमनालाल बजाज इस सत्याग्रह के अगुआ थे। उनकी गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस ने वल्लभभाई से इस युद्ध का दायित्व सँभालने का अनुरोध किया। वल्लभभाई ने नागपुर पहुँचकर सत्याग्रह की बागडोर अपने हाथों में ली। यहाँ भी आपकी विजय हुई। पुलिस को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा।

उसके बाद आपने गुजरात के बाढ़-पीड़ितों की सहायता का कार्य अपने हाथों में ले लिया। गुजरात का बहुत बड़ा प्रदेश जलमग्न हो गया था। सरकार व्यर्थ की लिखा-पढ़ी में समय खो रही थी। लाखों आदमी बेघरबार हो गए। तब आपने 2000 स्वयंसेवकों का दल बनाया, पानी से घिरे देहातों में स्वयं पहुँचे और जल-प्रलय से लाखों लोगों की प्राण-रक्षा की।

उन दिनों आप गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान होने के अतिरिक्त अहमदाबाद म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष भी थे। इस पद पर रहते हुए आपने पाँच वर्ष तक जनता की सेवा की। नगर की स्वास्थ्य-रक्षा के लिए आपने जो उपयोगी

योजनाएँ बनाई थीं, उन पर आज तक कार्य हो रहा है। अहमदाबाद के निवासी इन सेवाओं के लिए आपके ऋणी रहेंगे।

गुजरात के जल-प्रलय के बाद यहाँ दुष्काल आ गया। खेतियाँ बाढ़ से तबाह हो गईं। लोग भूखों मरने लगे। वल्लभभाई ने सरकार पर ज़ोर डालकर दुर्भिक्ष-पीड़ितों की सहायता के लिए एक करोड़ पचास लाख रुपए की रकम मंजूर करवा ली। सहायता-कार्य की व्यवस्था का भार वल्लभभाई को स्वयं उठाना पड़ा। वह व्यवस्था इतने अच्छे रूप से हुई कि आपकी प्रबन्ध-शक्ति का सिक्का सरकार भी मान गई। देश ने जान लिया कि वल्लभभाई केवल योद्धा ही नहीं, कुशल व्यवस्थापक भी हैं।

बारदोली सत्याग्रह

जल-प्रलय और दुर्भिक्ष-पीड़ितों की सहायता के कार्य से मुक्त होते ही आपको बारदोली के किसानों की सहायता के लिए सरकार से मोर्चा लेना पड़ा। बारदोली भी गुजरात का ही एक ताल्लुका है। आपको समाचार मिला कि सरकार ने इस प्रदेश के किसानों पर लगान की रकम में 30 प्रतिशत वृद्धि करने का निश्चय किया है। किसानों का कथन था कि यह वृद्धि अन्यायपूर्ण है। अपनी फरियाद लेकर वे वल्लभभाई के पास गए।

वल्लभभाई ने स्वयं बारदोली पहुंचकर तहकीकात की। उन्होंने अनुभव किया कि लगान में 30 प्रतिशत वृद्धि अन्यायपूर्ण है। किसानों ने यह लगान अदा न करने का प्रण किया। वल्लभभाई ने उन्हें चेतावनी दी थी–'लगान अदा न करने का अर्थ सरकार से युद्ध करना है। युद्ध में तुम्हें असीम कष्ट उठाने पड़ेंगे, ज़मीन-जायदाद का मोह छोड़ना पड़ेगा। सरकार तुम्हें मिट्टी में मिला देने की कोशिश करेगी। तुम्हारी स्त्रियां दाने-दाने को तरसेंगी। तुम्हारे बच्चे एक-एक बूंद दूध के बिना भूखे मर जाएंगे। धन-माल की ज़ब्ती की जाएगी। यह सब देखना होगा। इतनी मुसीबतें झेलने का साहस हो तो युद्ध प्रारम्भ करो, अन्यथा चुप होकर सरकार के आगे झुक जाओ।"

किसानों ने आपको विश्वास दिलाया कि वे अन्याय के आगे झुकने की अपेक्षा मौत को पसन्द करेंगे। किसानों का

दृढ़ निश्चय देखकर वल्लभभाई ने इसके नेतृत्व का भार उठाया। लड़ाई में आगे कदम रखकर आप पीछे हटना जानते ही नहीं थे। इसलिए आपने कदम रखने से पहले ही जनता को चेतावनी दे दी थी।

पहले आपने गवर्नर को सरकारी निश्चय पर पुनर्विचार करने की दरख्वास्त भेजी। सरकार ने इस प्रार्थना को ठुकरा दिया और लगान वसूल करने की निश्चित तारीख का ऐलान कर दिया। इस ऐलान के बाद वल्लभभाई ने भी किसानों से कह दिया कि वे लगान की एक भी पाई सरकार को न दें। दोनों ओर से संघर्ष शुरू हो गया।

इस संघर्ष में सफल होने के कारण आपको 'सरदार' की उपाधि मिली थी। तभी से आपके नाम के आगे 'सरदार' लिखा जाने लगा।

बारदोली सत्याग्रह की व्यवस्था में सरदार ने अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया। आपने पूरे ताल्लुके को भागों में बांटकर उनमें सत्याग्रह छावनियां बना दीं। इन छावनियों में सत्याग्रही रहते थे और एक मुखिया रहता था। छावनियों में परस्पर सम्पर्क रखने के लिए आपने सन्देशवाहकों की भी व्यवस्था की थी। कुछ जासूस भी रखे जो सरकार के अधिकारियों की चालों का विवरण सरदार को देते रहते थे।

सरकार ने भी इस सत्याग्रह को कुचलने में पूरी शक्ति लगा दी। मुम्बई के गवर्नर ने ऐलान कर दिया कि 'बारदोली' के सत्याग्रह को कुचलने में ब्रिटिश साम्राज्य की पूरी शक्ति

लगा दी जाएगी। सरकार ने गुण्डों की फौज तैयार की जो गांव-गांव में जाकर किसानों को मारती-पीटती थी और घरों में घुसकर लूट-मार करती थी। औरतों से बलात्कार किया जाता था।

लेकिन इन अत्याचारों से किसानों के निश्चय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। लगान की फूटी कौड़ी भी सरकार के खज़ाने में जमा नहीं हुई। तब सरकार ने ज़मीन-जायदाद कुर्क करनी शुरू कर दी। लेकिन सरकार को कुर्की का माल लेने वाला कोई खरीदार ही नहीं मिलता था।

सरदार ने बिलकुल सैनिक व्यवस्था की हुई थी। हर गांव में स्वयंसेवक तैनात थे। कुर्की करने वाले सरकारी अफसर को देखते ही वे बिगुल बजा देते थे। बिगुल सुनकर गांव के किसान खेतों में या जंगलों में चले जाते थे। गांव सुनसान हो जाता था। पुलिस को यह जानना भी कठिन हो जाता था कि किसका कौन-सा घर है।

बारदोली सत्याग्रह बाद में इतने महत्त्व का हो गया कि इसे देशव्यापी आन्दोलन का रूप मिल गया। मुम्बई असेम्बली के कुछ सदस्यों ने बारदोली के अत्याचारों पर रोष प्रकट करने के लिए असेम्बली की सदस्यता से त्यागपत्र भी दे दिया। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा। जनता की जीत हुई। वल्लभभाई विजयी सेनापति बने और उनको राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के नेताओं में गिना जाने लगा।

जेलयात्रा

बारदोली की विजय ने एक बार और गांधी जी को विश्वास दिला दिया कि सत्याग्रह का अस्त्र अमोघ है। इसका प्रयोग यदि सरदार जैसे सेनानी के हाथ से हो तो वह अवश्य सफल हो सकता है।

इसलिए 31 दिसम्बर, 1929 को लाहौर कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास होने के बाद गांधीजी ने फिर सत्याग्रह का हथियार संभाला। उधर गांधीजी ने डांडी-यात्रा की तैयारी की और इधर सरदार वल्लभभाई भी लड़ाई के मैदान में कूद पड़े। गुजरात के गांवों में सत्याग्रह का महत्त्व समझाने के लिए आपने दौरा किया।

7 मार्च को गुजरात के ही एक गांव 'रास' में पहुंचे। यहां पहुंचने पर उस इलाके के कलक्टर ने भाषण करने पर

प्रतिबन्ध लगाने का नोटिस दिया। सरदार वल्लभभाई कब यह प्रतिबन्ध मानने वाले थे! आप निश्चित समय पर सभा-स्थल पर पहुंचे और गिरफ्तार कर लिए गए। पांच सौ रुपये जुर्माने के साथ तीन मास की कैद की सज़ा सुनाई गई। जेल में बड़े कष्टों का सामना करना पड़ा। स्वास्थ्य गिर गया। 15 पौंड वज़न कम हो गया।

तीन महीने तीन सप्ताह की सज़ा के बाद आप 26 जून को रिहा हुए। उस समय सत्याग्रह आन्दोलन पूरे यौवन पर था। चारों ओर लड़ाई के बिगुल बज रहे थे। लाठियों की वर्षा हो रही थी। सत्याग्रह के सिपाही हंसते-हंसते लाठियों की वर्षा के बीच में जाते थे, गोलियों की बौछार अपने सीने पर खाते थे और प्राणों की बाज़ी लगाकर आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे।

उस समय पं॰ मोतीलाल जी के नेतृत्व में आन्दोलन चल रहा था। मोतीलाल जी ने जेल जाते समय सरदार वल्लभभाई को अपना उत्तराधिकारी नियत किया। सरदार ने देश का नेतृत्व संभाला।

मुम्बई से आप सत्याग्रह के युद्ध की सारी व्यवस्था कर रहे थे। मुम्बई में एक अगस्त को लोकमान्य तिलक की बरसी मनाई गई। लाखों आदमियों का एक विशाल जुलूस सरदार के नेतृत्व में निकला। बोरीबन्दर स्टेशन के सामने पुलिस ने जुलूस को रोक लिया और लोगों को तितर-बितर होने का हुक्म दिया। लेकिन वहां तो सभी वल्लभभाई के नेतृत्व में जान

पर खेलने आए थे।

सत्याग्रह शुरू हो गया। पुलिस आगे नहीं बढ़ने देती थी, सत्याग्रही पीछे न हटने का प्रण किए बैठे थे। हज़ारों आदमी रास्ते पर बैठ गए, और शाम के चार बजे से दूसरे दिन के आठ बजे तक रात-भर भूख-प्यास की परवाह किए बिना ही वहीं बैठे रहे। उस दिन सरकारी सिपाहियों ने बड़ी निर्दयता से लाठी-प्रहार किया। सैकड़ों के सिर फूटे, और सैकड़ों बेहोश हुए। सरदार वल्लभभाई गिरफ्तार करके जेल भेज दिए गए। मुकदमा चला, तीन महीने की सज़ा सुनाई गई।

इस बीच गांधी-इरविन समझौता हो गया। समझौते के फलस्वरूप सभी राजबन्दी रिहा किए गए। आप भी जेल से छूटे।

राष्ट्रपति वल्लभभाई

सरदार वल्लभभाई की राष्ट्रीय सेवाओं से मुग्ध होकर देश ने उन्हें कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन का अध्यक्ष चुना। उस समय यही सम्मान देकर गरीब देशवासी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते थे। इससे बड़ा पुरस्कार उनके पास नहीं था।

कराची कांग्रेस का अधिवेशन घटनापूर्ण अधिवेशन था। अधिवेशन से कुछ दिन पूर्व ही सरकार ने भगतसिंह को फांसी दी थी और कुछ दिन पूर्व ही गांधी-इरविन समझौता भी हुआ

था। सरदार वल्लभभाई ने सभापति के जुलूस का समारोह शहीद भगतसिंह की याद में स्थगित कर दिया। अध्यक्ष-पद से आपने जो भाषण दिया वह भी अनोखा था—बहुत छोटा और सारगर्भित।

कराची कांग्रेस के बाद शीघ्र ही फिर सत्याग्रह की घोषणा की गई। गांधीजी विलायत से खाली हाथ आए थे। सरकार ने कांग्रेस को कुचलने का निश्चय किया। सरदार वल्लभभाई भी पुनः गिरफ्तार कर लिए गए। इस बार जेल जाने पर आपका स्वास्थ्य बहुत गिर गया, इसलिए मियाद से पहले ही आपको जेल से मुक्त करना पड़ा।

डाक्टरों ने पूर्ण विश्राम की सलाह दी। किन्तु देश में चुनाव का युद्ध शुरू हो गया था। डाक्टरों की सलाह न मानकर आपने कांग्रेसी उम्मीदवारों की सफलता के लिए देश का भ्रमण किया। पंजाब, संयुक्त-प्रान्त, बिहार, असम आदि दूर-दूर प्रदेशों में भी आप गए।

कांग्रेस के उम्मीदवारों का निर्णय भी आपके हाथ में था। आप ही कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड के अध्यक्ष थे। इस पार्लियामेंटरी बोर्ड का काम कांग्रेस के टिकट पर चुने गए प्रतिनिधियों और मंत्रियों को रास्ता दिखलाना था। पार्लियामेंटरी बोर्ड की आज्ञा से ही मंत्रियों को शासन-नीति का निश्चय करना पड़ता था। जो मंत्री कांग्रेस के सिद्धांतों के प्रतिकूल आचरण करता था तो वह वल्लभभाई के कड़े अनुशासन से बच नहीं पाता था।

सरदार वल्लभभाई ने मंत्रियों पर कड़ी निगरानी रखी थी। आठ प्रान्तों में कांग्रेस का मंत्रिमण्डल शासन कर रहा था और उन आठों प्रान्तों के शासक मंत्रियों की लगाम अकेले सरदार के हाथ में थी। कांग्रेस की नीति के विरुद्ध चलने पर मन्त्रियों को अपने पद से त्यागपत्र देने के लिए आप विवश कर देते थे। मध्य-प्रान्त के मुख्यमन्त्री डॉक्टर खरे को इसी तरह अपना पद छोड़ना पड़ा था।

महाक्रांति

1942 में गांधीजी ने स्वाधीनता के अन्तिम युद्ध की घोषणा की। सरदार वल्लभभाई भी कार्यसमिति के अन्य

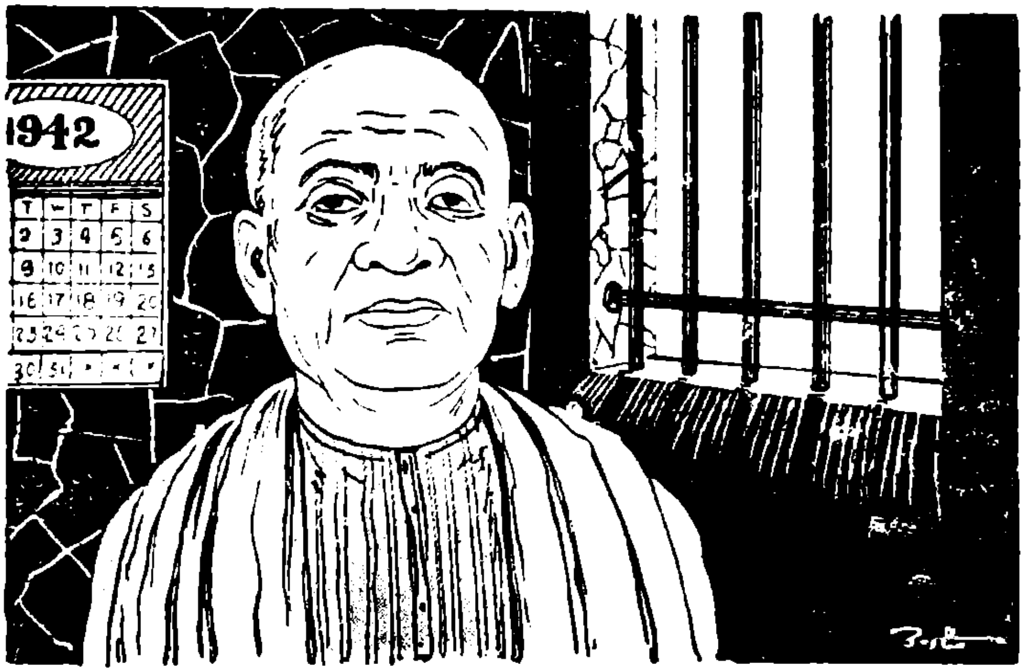

सदस्यों के साथ अहमदनगर जेल में बन्द कर दिए गए। 9 अगस्त से पूर्व आपने जो भाषण दिए थे उनमें कहा था कि स्वाधीनता का यह युद्ध एक सप्ताह से अधिक नहीं चलेगा। एक सप्ताह में ही अंग्रेज़ घुटने टेक देंगे।

15 जून, 1945 के दिन आपको अन्य नेताओं के साथ ही जेल से मुक्त किया गया। उन दिनों अंग्रेज़ी सरकार ने भारत को आज़ादी देने का संकल्प घोषित कर दिया—मुस्लिम-लीग रास्ते में रुकावटें डाल रही थी। आपने मुस्लिम-लीग को इतनी खरी-खरी बातें सुनाईं कि लीगी मुसलमान आपके दुश्मन बन गए। आपका कहना था—"हम अंग्रेज़ों से भी आज़ादी के लिए लड़ेंगे और यदि मुसलमान रास्ते का रोड़ा बनेंगे तो उनसे भी लड़ेंगे।" मि॰ जिन्ना ने कहा था—"मुसलमानों की स्वीकृति के बिना आज़ादी दी गई तो हिन्दुस्तान में तलवारें चल जाएंगी, खून की नदियां बह जाएंगी।" आपने उत्तर दिया—"तलवार का जवाब तलवार से दिया जाएगा, खून की नदियां बहाने वाले को पूरी सज़ा दी जाएगी।"

आपने जनता को समझाया कि आत्मरक्षा के लिए हथियार उठाना हिंसा नहीं है। अहिंसा कमज़ोरों का नहीं, बहादुरों का हथियार है। कायर बनकर मरने की अपेक्षा हथियार चलाते हुए मरना अधिक अच्छा है।

सन् 1946 में, कांग्रेस मन्त्रिमंडल बनने पर आपको प्रचार, रियासती विभाग और गृह-विभाग का मन्त्री बनाया गया। तीनों विभागों का सफलता से संचालन करते हुए आपने

जिस राजनीतिज्ञता का परिचय दिया, उसकी प्रशंसा विदेशों के राजनीतिज्ञों ने भी मुक्त कण्ठ से की है। आप तीनों विभागों के मन्त्री होने के साथ उपप्रधानमन्त्री भी थे।

आप जिस काम का निश्चय कर लेते थे, उसे पूरा करने में प्राणों की बाज़ी लगा देते थे। स्वाधीनता की घोषणा होने के बाद 15 अगस्त तक कई बार देश को आपकी दृढ़ता ने ही बचाया। 9 दिसम्बर से विधानसभा का अधिवेशन होने की घोषणा हो चुकी थी। लीग ने विधानसभा का बहिष्कार किया था। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री भी विधानसभा को स्थगित करवाने का यत्न कर रहे थे।

कुछ दिन बाद आपको लंदन का बुलावा आया। आपने लंदन जाने से इन्कार कर दिया। जवाहरलाल जी लंदन गए। जनता को सन्देह था कि कहीं इन चालों से ब्रिटिश सरकार लीग से मिलकर विधानसभा को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित न करवा दे। जनता के विश्वास को दृढ़ करने के लिए आपने मुंबई में घोषणा की थी—"आकाश चाहे गिर पड़े, पृथ्वी चाहे फूट जाए, विधानसभा का अधिवेशन 9 दिसम्बर से पीछे नहीं टल सकता।" अन्त में आपकी ही बात पूरी हुई। विधानसभा 9 दिसम्बर को ही शुरू हुई। जवाहरलाल जी को लंदन से दो-तीन दिन में वापस आना पड़ा।

स्वाधीनता मिलने के बाद यह डर था कि सारे देश में विप्लव हो जाएगा; रियासतें अपनी स्वतंत्र सरकारें कायम कर लेंगी; मुस्लिम जनता विद्रोह कर देगी। देश में अराजकता फैल

॥।।।।। । ये डर निराधार नहीं थे। स्वाधीनता देते हुए अंग्रेज़ इन [illegible] का बीज बो गए थे। हिन्दुस्तान की 600 से अधिक रियासतों को वे आज़ादी दे गए थे और हिन्दुस्तान की मुस्लिम जनता को खून बहाने के लिए उकसा गए थे। किन्तु सरदार की कूटनीतिज्ञता ने उनकी चालों को परास्त कर दिया।

जूनागढ़ का प्रश्न

रियासती विभाग का मन्त्री बनते समय आपने ऐलान कर दिया था—"भारत सरकार रियासतों के साथ परस्पर सहयोग की नीति से चलेगी। रियासतों को स्मरण रखना चाहिए कि यदि वे जनता की आवाज़ को नहीं मानेंगी तो उन्हें अराजकता का सामना करना पड़ेगा। इसलिए उनका हित इसी में है कि वे भारत सरकार के साथ मित्रता निभाते हुए शासन करें।" आपने यह भी ऐलान कर दिया था कि जो रियासत जनता की राय को न मानकर किसी और देश से सन्धि करेगी, उसे हम शत्रु समझेंगे।

सरदार की कोशिशों से स्वाधीनता मिलने के बाद दो वर्षों में ही प्रायः सभी रियासतों ने जनता की राय मानते हुए भारत सरकार से सन्धि कर ली। केवल कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद की सरकारों ने स्वतंत्र रहने का निश्चय कायम रखा। कश्मीर पर पाकिस्तान की सेनाओं ने हमला कर दिया;

इसलिए उसे भी भारतीय संघ के साथ होने की घोषणा करनी पड़ी।

जूनागढ़ में पाकिस्तान ने पैर फैलाने चाहे थे। पाकिस्तान की चालों को मात देने के लिए आपने जूनागढ़ के चारों ओर के इलाकों, मानवदार, मंगरोल और बावरीवाड में ब्रिगेडियर गुरुदयाल सिंह की अध्यक्षता में अपनी सेनाएं भेज दीं। इस बीच श्यामलदास गांधी ने अपने स्वयंसेवकों के साथ जूनागढ़ में प्रवेश किया। जूनागढ़ का नवाब रियासत छोड़कर भाग गया। जूनागढ़ में जनता की हुकूमत कायम हो गई। 12 नवम्बर, 1947 को जूनागढ़ पहुंचकर आपने हैदराबाद को भी चेतावनी दी—"यदि हैदराबाद का नवाब भी उल्टी चालें चलता रहा तो उसका भविष्य भी वही होगा जो जूनागढ़ के नवाब का हुआ है।"

हैदराबाद की उलझन

हैदराबाद की उलझनें सुलझाने में पटेल को सबसे ज्यादा देर लगी। हैदराबाद का विचार पाकिस्तान से सन्धि करने का था। कानूनी तौर पर हैदराबाद को ऐसा करने का हक था–किन्तु अस्सी फीसदी जनता की राय को ठुकराकर ही हैदराबाद ऐसा कर सकता था। सरदार पटेल ने हैदराबाद के नवाब को चेतावनी दी थी कि वे पाकिस्तान का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेंगे। आखिर हैदराबाद के नवाब को मजबूर होना पड़ा कि वह भारत सरकार से सन्धि करे। इस सन्धि की चर्चा करते हुए सरदार पटेल ने 29 नवम्बर, 1947 को भारतीय पार्लियामेंट में एक बयान दिया था, जिसमें आपने भारत और हैदराबाद के नये 'यथापूर्व समझौते' (Standstill Agreement) की व्याख्या की।

हैदराबाद ने इस समझौते को कई बार तोड़ा और पाकिस्तान को करोड़ों रुपये का कर्ज़ा दिया। तब सरदार पटेल की आज्ञा से भारत की सेनाओं ने जनरल चौधरी के सेनापतित्व में हैदराबाद में प्रवेश किया। उस समय रियासत के धर्मान्ध मुसलमान कासिम रिज़वी के नेतृत्व में वहां की हिन्दू प्रजा पर अत्याचार कर रहे थे। शासन के सब महकमों में अराजकता फैली हुई थी। एक सप्ताह की लड़ाई में ही हैदराबाद ने आत्मसमर्पण कर दिया। नवाब ने यह स्वीकार किया कि वे रिज़वी की कठपुतली थे।

रियासतों को भारत सरकार के नीचे लाने के साथ दूसरा काम यह भी था कि छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर बड़े संघ बनाए जाएं। पहले आपने काठियावाड़ की छोटी रियासतों को मिलाकर 'सौराष्ट्र संघ' बनाया। फिर मध्य भारत, राजस्थान, हिमाचल, विन्ध्यप्रदेश आदि संघ भी बने। देश के पुनर्संगठन के समय रियासतों के ये संघ नये चौदह राज्यों में मिला दिए गए। इन राज्यों के मन्त्रिमण्डलों का निर्माण जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों में से होता है।

मुसलमानों को चेतावनी

रियासतों के प्रश्न के बाद सबसे जटिल प्रश्न साम्प्रदायिकता का था, जिससे स्वतंत्र भारत को खतरा था। साम्प्रदायिकता के प्रश्न को हल करने के लिए भी सरदार वल्लभभाई ने अथक परिश्रम किया।

30 सितम्बर, 1947 को, जबकि पंजाब की भूमि खून से लथपथ हो चुकी थी, आप स्वयं अमृतसर गए और वहां सिख नेताओं से मिलकर शान्ति स्थापना के लिए सलाह-मशवरा किया। आपने सिक्खों से प्रार्थना की कि वे मुस्लिम शरणार्थियों को सुरक्षित रूप से पाकिस्तान जाने दें। आपकी प्रार्थना का यह प्रभाव हुआ कि सैनिक सहायता के बिना ही सब मुस्लिम शरणार्थी अमृतसर से गुज़रकर लाहौर पहुंच सके। 22 अक्टूबर,

1947 को आपने पटियाला के दरबार-हाल में पंथिक-कान्फ्रेंस में भाग लिया और उसी दिन शाम को डेढ़ लाख की संख्या में उपस्थित जनता में भाषण दिया।

उन दिनों सरदार ने देखा कि हिन्दुस्तान के मुसलमान अब भी छिपे-छिपे पाकिस्तान की हिमायत कर रहे हैं। सरदार को मुसलमानों की इस नीति के प्रति बड़ा असन्तोष था। इस असन्तोष पर आपने 6 जनवरी, 1948 को लखनऊ के भाषण में प्रकाश डाला। इस भाषण की खूब चर्चा हुई। आपने कहा था—

"मैं मुसलमानों का सच्चा मित्र हूं, यद्यपि मुझे उनका दुश्मन कहा जाता है। मैं लाग-लपेट की बात नहीं करता। बगुला-भगत बनना मुझे नहीं आता। मुसलमानों को मैं कह देना चाहता हूं कि केवल शाब्दिक समर्थन से वे अपने पुराने पापों को नहीं धो सकते। उन्हें चाहिए कि वे पाकिस्तान के हमलों का विरोध करें और देशभक्ति का परिचय दें। वे दो नावों पर एकसाथ सवार नहीं हो सकते। आपको एक नाव चुन लेनी होगी। जो हिन्द के प्रति दिल से वफादार नहीं हैं उन्हें चाहिए कि वे पाकिस्तान चले जाएं।"

मुसलमानों को चेतावनी देकर ही सरदार वल्लभभाई चुप नहीं रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को आपने इन शब्दों से सावधान किया था—"मैं राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ से अपील करता हूं कि संघ साम्प्रदायिक कट्टरता को छोड़कर बुद्धिमानी और चतुराई से काम ले। संघ को चाहिए कि वह कभी

आक्रमण में पहल न करे।" हिन्दू सभा के हिमायतियों से आपने अपील की थी कि वे कांग्रेस के साथ सम्मिलित हो जाएं। आपने उन्हें संबोधित करते हुए कहा—"यदि आप अपने को हिन्दू धर्म की रक्षा का ठेकेदार समझते हैं तो यह आपकी भूल है। हिन्दू धर्म बड़ा उदार है। उसमें बड़ी सहिष्णुता है। वह इतना संकीर्ण नहीं, जितना आप समझते हैं।"

कांग्रेस के उन नेताओं को भी आपने चेतावनी दी जो कांग्रेस के नाम पर अन्य सभी दलों के लोगों को चुप कराना चाहते थे। इन कांग्रेसजनों का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को मिटा देना था। आपने कहा—

"आप लोग शासन का अधिकार पाकर इतने मदान्ध न हो जाएं कि सबको डन्डे के ज़ोर से कुचलने की ठान लें। डण्डे के प्रहार से किसी भी संगठन को मिटाया नहीं जा सकता। डण्डा तो चोर-डाकुओं के लिए इस्तेमाल किया जाता है। संघ के लोग चोर-डाकू तो हैं नहीं। वे भी देशभक्त हैं, वे भी अपने देश से प्रेम करते हैं। कांग्रेस को चाहिए कि वह उन पर प्रेम से विजय पाने की कोशिश करे। डण्डे के ज़ोर से नहीं।"

रामराज्य की स्थापना

गांधीजी ने दिल्ली और पंजाब में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों को प्रेमपूर्ण बनाने के लिए दिल्ली में उपवास शुरू कर दिया

था। जिस दिन उपवास शुरू हुआ उसी दिन सरदार वल्लभभाई को राजकोट जाना पड़ा। राजकोट में 15 जनवरी, 1948 के दिन आपने गांधीजी के उपवास का ज़िक्र करते हुए कहा—

"मैं बहुत दुःखी हूं। महात्माजी को उपवास की हालत में छोड़कर मुझे यहां आना पड़ा। आजकल कुछ हिन्दुओं ने महात्माजी को गालियां देना अपना पेशा बना लिया है। मैं ऐसे लोगों को हिन्दू नहीं मानता। महात्माजी के तपोबल ने ही हमें स्वाधीन बनाया है। उस स्वाधीनता को रामराज्य में बदलना आपका काम है। रामराज्य की पहली शर्त हिन्दू-मुस्लिम एकता है और दूसरी हरिजन-उद्धार। स्वावलम्बी होना रामराज्य की तीसरी शर्त है। हमें गांवों में ग्राम-पंचायतें खोलनी चाहिएं। हमारी संस्कृति हमें जीवन के ऊंचे आदर्श सिखाती है। उन आदर्शों के प्रति यदि हम सच्चे रहें तो रामराज्य स्वयं ही स्थापित हो जाएगा।"

मैं सच्चाई नहीं छोड़ूंगा

सरदार वल्लभभाई को 'लौहपुरुष' या 'वज्रपुरुष' कहा जाता था। शासन पद संभालने के बाद उनका यह गुण और भी अधिक स्पष्ट हुआ। झूठ के सामने झुकना या बनावट की मीठी बातें करना उन्हें नहीं आता था। इसलिए आपके विपक्षी आपसे डरते थे।

आपके लखनऊ वाले भाषण से कुछ मुसलमान नेता बहुत झुंझला गए। उन्होंने गांधीजी से शिकायत भी की। इसकी चर्चा सरदार वल्लभभाई ने अपने 15 जनवरी वाले मुम्बई के भाषण में की। मुम्बई के म्युनिसिपल कारपोरेशन द्वारा आपको एक मानपत्र भेंट किया गया था। लाखों की भीड़ में भाषण देते हुए आपने कहा था–

"मैं बहुत स्पष्टवादी हूं और बहुत कड़वी बात कह देता हूं–हिन्दुओं को भी, मुसलमानों को भी। फिर भी मैं दोनों का मित्र हूं। जो मुसलमान मुझे अपना मित्र नहीं मानते, वे दीवाने हैं। उन्हें सच-झूठ की तमीज़ नहीं है। लेकिन उन्हें खुश करने के लिए ही तो मैं सच्चाई को नहीं छोड़ सकता, अपने कर्त्तव्य से मुख नहीं मोड़ सकता। कुछ मुसलमान मेरे लखनऊ वाले भाषण को लेकर गांधी जी से शिकायत करने गए थे। मैंने भाषण में मुसलमानों से कहा था कि कश्मीर व हैदराबाद के प्रति पाकिस्तान ने जो नीति अपना रखी है उसका उन्हें प्रतिवाद करना चाहिए। यदि वे ऐसा नहीं करते तो अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं करते। गांधीजी ने उनकी शिकायतें सुनकर सार्वजनिक रूप से मेरे कथन का स्पष्टीकरण किया है और मेरी हिमायत की है। मुझे इससे बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि मैं इतना कमज़ोर नहीं हूं कि दूसरों को मेरी हिमायत करनी पड़े।"

अपनी स्पष्टवादिता के कारण आपके प्रति कई भ्रमपूर्ण बातें फैल जाती थीं, किन्तु सच्चाई प्रकट होने पर आपका उज्ज्वल चरित्र और भी तेजस्वी रूप से प्रकट होता था।

पचपन करोड़ का प्रश्न

उन दिनों पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने का प्रश्न बड़ा जटिल हो गया था। पाकिस्तान को यह रकम हिन्दुस्तान से वसूल करनी थी, हिन्दुस्तान का भी पाकिस्तान से बहुत पावना शेष था। पाकिस्तान सरकार अपनी ज़िम्मेदारियां तो निभाती नहीं थी, किन्तु हिन्दुस्तान से पाई-पाई वसूल करने पर तुली हुई थी। सरदार वल्लभभाई ने आग्रह किया—"हम पाकिस्तान को यह रकम तभी देंगे यदि वह भी अपना फर्ज़ पूरा करे।" सरदार वल्लभभाई के वक्तव्य से पाकिस्तान की सरकार भड़क उठी।

हिन्दुस्तान के कुछ मुस्लिम नेता भी गांधीजी के पास फरियाद लेकर गए। गांधी जी ने भी सरदार वल्लभभाई पर दबाव डाला। आखिर आपने बिना शर्त पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देना स्वीकार कर लिया। इसे स्वीकार करते हुए आपने मुम्बई के भाषण में कहा था—"हम पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। पैसे की खातिर मनमुटाव क्यों बढ़ाएं? गांधीजी की आत्मा को यदि रकम की अदायगी से सन्तोष होता है तो हम निःसंकोच खुद दे देंगे। गांधीजी उस ऊंचे दर्जे पर पहुंच गए हैं जहां मनुष्य क्रोध के वश में नहीं होता। उनमें प्रेम ही भरा है। यदि हम उनके आदर्शों पर चल सकते तो हमें पुलिस और फौज की भी जरूरत नहीं थी।"

मज़दूर और व्यवसाय

स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद मज़दूरों को खुशहाल बनाने का प्रश्न राष्ट्रीय महत्त्व का प्रश्न बन गया। मज़दूरों में भी जागृति आ गई। वे अब अपने अधिकारों के लिए लड़ना सीख गए। पूंजीपतियों और मज़दूरों के बीच संघर्ष चलता ही रहता। सरदार वल्लभभाई मज़दूरों के हिमायती थे, किन्तु आप यह नहीं चाहते थे कि इस संघर्ष में देश की आर्थिक स्थिति संकट में पड़ जाए। इसलिए आप दोनों पक्षों को शान्तिपूर्वक अपने मतभेदों को दूर करने की सलाह देते रहते थे। 5 जनवरी, 1948 के दिन आपने कोलकाता में 'कोलकाता क्लब' की ओर से अर्पित मानपत्र का उत्तर देते हुए कहा था–

"राष्ट्रनिर्माण के काम में हमें पूंजी और श्रम दोनों का सहयोग लेना है। दोनों में सहयोग नहीं होगा तो देश बरबाद हो जाएगा। इंग्लैंड में समाजवाद तभी आया जब देश व्यावसायिक उन्नति के शिखर पर पहुंच गया था। हमें भी देश के व्यवसायों को बढ़ाने के बाद ही समाजवादी बंटवारे की ओर ध्यान देना चाहिए। किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि सरकार पूंजीपतियों द्वारा मज़दूरों का शोषण स्वीकार कर लेगी। सरकार ऐसा हरगिज़ नहीं होने देगी।"

हड़तालों में बरबादी

हड़तालों के सम्बन्ध में विचार प्रकट करते हुए आपने कहा—"हड़तालों का हथियार अब बड़ा सस्ता हो गया है। अक्सर इसका इस्तेमाल वही लोग करते हैं जिन्हें मज़दूरों का नेता बनने की भूख होती है। धन का बंटवारा तो तभी होगा जब पहले काफी धन पैदा कर लिया जाए। हम धन पैदा करने से पहले ही बंटवारे का सिर-फुटौवल शुरू कर देते हैं। इस समय देश के मज़दूरों का नेतृत्व सच्चे लोगों के हाथों में नहीं है। फिर भी मज़दूरों पर दबाव डालकर हम उन्हें अपनी बात नहीं समझा सकते। सहानूभूति और सच्ची हित चिन्ता से ही उनके दिलों को जीत सकते हैं।"

20 जनवरी, 1948 को आपने मुम्बई के मजदूरों के सामने परेल के कामगार मैदान में भाषण दिया था। उसमें भी आपने मज़दूरों से कहा था—

"आज हम चौराहे पर खड़े हैं। हमारी भूलें हमें हमेशा के लिए बरबादी के गड्ढे में गिरा देंगी। हमें बहुत सोच-समझकर आगे बढ़ना है। बरबाद होंगे तो हम दोनों होंगे—मज़दूर भी, पूंजीपति भी। दोनों के भविष्य एक-दूसरे से मिले हुए हैं।

"समाजवादियों ने जब एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का संगठन किया था तो देश का कल्याण नहीं हुआ था। जहाज़ी बंदरगाह के मज़दूरों की हड़ताल से देश में अनाज आना रुक जाता है। गरीब लोग कष्ट पाते हैं। कष्टों का

ज्यादा बोझ गरीबों पर ही पड़ता है। समाजवादी इन बातों को नहीं सोचते। वे शासन अधिकार चाहते हैं तो ले लें। कांग्रेस का ध्येय स्वाधीनता की प्राप्ति था, वह तो पूरा हो गया। अब कोई भी शासन का अधिकार ले सकता है। किन्तु मज़दूरों को इन दलबन्दियों की दलदल में नहीं फंसना चाहिए।''

मैं गरीबों का दोस्त हूं

इसके बाद 22 जनवरी, 1948 के दिन अहमदाबाद में महाजन एसोसिएशन के सामने भाषण देते हुए भी आपने इन्हीं बातों को दोहराया। वहां आपने कहा था—

''मुझमें यदि कोई गुण है तो गांधीजी की ही संगति से है। मैंने जो कुछ पाया है, उन्हीं की देन है। सबसे पहले महात्माजी ने ही अहमदाबाद में वस्त्र-व्यवसायी मज़दूरों का एसोसिएशन बनाया था। आज मज़दूरों में जो संगठन नज़र आता है उसकी नींव महात्माजी ने ही रखी थी।''

सरदार वल्लभभाई की कुशल और दृढ़ शासन-नीति का ही यह प्रभाव है कि हिन्दुस्तान अभी तक लाल झंडे की छाया में नहीं गया। हिन्दुस्तान भी चीन बन जाता यदि सरदार पटेल न होते।

आपने कई बार देश को अराजकता के गड्ढे में गिरने से बचाया। कोलकाता के सभी सरकारी नौकरों ने एक बार

हड़ताल करने का निश्चय किया था। हड़ताल की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। आप उससे एक दिन पहले 3 जनवरी 1948 के दिन कोलकाता पहुंचे। 6 लाख से अधिक लोगों की भीड़ आपका भाषण सुनने पहुंची। आपने कहा—

"जो लोग मौजूदा मंत्रियों के काम से संतुष्ट नहीं हैं, उन्हें चाहिए कि वे वैधानिक रीति से उन मंत्रियों को हटा दें। गुण्डागीरी से शहरी जीवन बरबाद होता है। मंत्रियों को आपने ही बनाया है, आप जब चाहें उन्हें हटा सकते हैं, किन्तु हड़ताल से नहीं, वैधानिक उपायों से।

"कुछ लोग कहते हैं कि मैं नरेशों, ज़मींदारों और पूंजीपतियों का दोस्त हूं। किन्तु मेरा दावा है कि मैं सभी का दोस्त हूं। गांधी जी से मैंने एक बात सीखी थी, वह यह है कि अपनी मिल्कियत नहीं बनाना। मेरे पास आज कोई मिल्कियत नहीं है। मैं गरीबों का भी दोस्त हूं, अमीरों का भी। जो लोग अमीरों को गालियां देकर ही देश के नेता बनना चाहते हैं, वे भूल करते हैं। ऐसा करना आजकल फैशन हो गया है।

"ये लोग देश में मज़दूर-राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इंग्लैंड में भी मज़दूरों का राज्य है। किन्तु वहां मज़दूरों ने हड़तालें करके यह राज्य नहीं लिया है। मज़दूर-राज्य हम गांधी जी के आदर्शों पर चलकर ही ले सकते हैं।"

पाकिस्तान को चुनौती

पाकिस्तान के शासक यदि किसी के व्यक्तित्व को मानते थे तो पटेल को ही मानते थे। हैदराबाद की समस्या हल होने से पहले पाकिस्तान की सरकार हैदराबाद से मिलकर हिन्दुस्तान को नुकसान पहुंचाने की साज़िशें कर रही थी। सरदार पटेल ने 3 जनवरी, 1948 के दिन कोलकाता में भाषण देते हुए उन्हें इन शब्दों में चेतावनी दी थी–

"हम पाकिस्तान से इतना ही कहना चाहते हैं कि वह हमारे मामलों में दखल न दे। उन्हें पाकिस्तान मिल गया। जैसा मन में आए उसका इस्तेमाल करें। उसे बहिश्त बनाएं या दोज़ख–यह उनका अधिकार है, उसे जैसा चाहें बना लें।

"पाकिस्तान वाले कहते हैं कि उसके दुश्मन उसे तबाह करना चाहते हैं। मैं कहता हूं, यह तबाही आएगी तो बाहर से नहीं, भीतर से ही आएगी। हमने पाकिस्तान को बड़ी उदारता से मुंहमांगी चीज़ें दे दीं। लेकिन हम यह बर्दाश्त नहीं करेंगे कि वह उनसे गोला-बारूद बनाकर हम पर हमला करे।

"मैं पाकिस्तान को विश्वास दिलाता हूं कि हम पाकिस्तान का अकल्याण नहीं चाहते। किन्तु उन्हें भी चाहिए कि वे हमें शान्तिपूर्वक रहने दें।

"कश्मीर का प्रश्न हमने राष्ट्रसंघ के सुपुर्द कर दिया है। जनता का बहुमत ही कश्मीर के भविष्य का फैसला करेगा। किन्तु जब तक खून-खराबी चल रही है, जनता की राय कैसे

ली जा सकती है? यदि हमें तलवार के ज़ोर पर ही कश्मीर की रक्षा करनी पड़े तो जनता की राय लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं पाकिस्तान को खबरदार कर देना चाहता हूं कि हम जनता की राय जाने बिना कश्मीर की भूमि का एक इंच हिस्सा भी पाकिस्तान के सुपुर्द नहीं करेंगे।"

गांधीजी के पश्चात्

गांधीजी के बलिदान से सरदार पटेल की कमर टूट गई। दोनों में अगाध प्रेम था। सरदार पटेल गांधीजी को बड़ा भाई और गुरु दोनों मानते थे। बलिदान से पूर्व गांधीजी सरदार पटेल से ही बातें करके प्रार्थना-सभा में आ रहे थे। दोनों की पहली भेंट अहमदाबाद में सन् 1916 में हुई थी। 32 वर्ष तक दोनों कदम से कदम मिलाते हुए एक ही रास्ते के यात्री रहे थे। कई बार जेल में भी दोनों साथ रहे थे। सरदार पटेल गांधीजी की सेवा से कभी नहीं चूकते थे। स्वयं गांधीजी ने सरदार की सेवा के प्रति इन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट की थी–

"जेल में वल्लभभाई ने मेरे प्रति जो स्नेह दिखाया उससे मुझे अपनी माता द्वारा प्रदर्शित स्नेह की याद आ रही है। मैं नहीं जानता था कि उनके पास एक मां का हृदय भी है।"

साधारणतया लोगों को सरदार वल्लभभाई पटेल के निर्मोही और कठोर रूप का ही पता है। शासन के या कर्त्तव्यपालन के समय आप सचमुच बहुत कठोर हो जाते थे। उस समय आप हृदय की सारी कोमलताओं को ताक पर रख देते थे और बिलकुल निर्मम बन जाते थे।

आपकी निर्ममता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता था कि जब अदालत में वकील की हैसियत से बहस

करते हुए आपको अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिला, तब भी आपने अपना कर्त्तव्य नहीं छोड़ा। बहस जारी रखी। मृत्यु के तार को पढ़ लिया और मोड़कर जेब में रख लिया। बहस समाप्त होने के बाद आपने अदालत से विदा ली।

किन्तु यह कठोरता केवल शासन और कर्त्तव्य पालन में ही थी; अन्यथा आप भी बड़ा स्नेही हृदय और विनोदी स्वभाव रखते थे।

आपका विनोद बड़ा स्पष्ट और चुभने वाला होता था। 1931 में जब आपके बड़े भाई बीमार थे, तब किसी ने इनसे पूछा—"आपके भाई को कौन-सी बीमारी है?" आपने मसखरेपन से जवाब दिया—"उन्हें असेम्बली का प्रधान न बनने की बीमारी है।"

आपके भाषण में भी इस विनोद का आभास मिलता था। अपने भाषण में आप छोटे-छोटे लतीफे भी सुनाते जाते थे। भाषण का विषय कितना ही गम्भीर हो, आप उसे सीधी-सादी भाषा और व्यंग्य-विनोद-भरे चुटकुलों से बड़ा दिलचस्प बना देते थे।

हैदराबाद का प्रश्न हल करने में आपको आशातीत सफलता मिली थी। डर था कि हैदराबाद की चिनगारियां देश-भर में फैलकर कहीं आग न लगा दें। किन्तु सरदार वल्लभभाई की दृढ़ शासन-नीति ने देश को बचा लिया। हैदराबाद के निवासियों को कासिम रिज़वी के अत्याचारों से बचाने के लिए आपने फौज को रियासत में प्रवेश करने की

आज्ञा दे दी। 5 दिन में ही हिन्द सेना सिकन्दराबाद पहुंच गई। हिन्द-सेना ने निज़ाम को भी रिज़वी के चंगुल से बचा लिया। कासिम रिज़वी के साथ उनके दल के हज़ारों लोग गिरफ्तार कर लिए गए। निज़ाम की सेना ने हथियार डाल दिए। निज़ाम ने सन्धि करनी चाही, किन्तु सरदार पटेल ने बिना शर्त समर्पण करने की मांग की। निज़ाम को मानना पड़ा।

हैदराबाद के समर्पण के साथ कश्मीर के अतिरिक्त देश की सब रियासतें भारत में सम्मिलित हो चुकी थीं। सरदार पटेल का यह चमत्कारी कार्य भारत के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। सदियों तक आपका यशस्वी नाम अमर रहेगा। जो काम सम्राट अशोक और चन्द्रगुप्त नहीं कर सके, वह काम आपकी राजनीतिज्ञता ने कर दिखाया।

रियासतों के संघीकरण के बाद भी आपकी परेशानियां दूर नहीं हुईं। आपका ध्येय आदर्श भारत को अखण्डित रखना था। दुश्मन इस महादेश को खण्ड-खण्ड करना चाहते थे। रियासतों की समस्या के बाद प्रान्तों के विभाजन का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। भाषा-भेद के आधार पर प्रान्तों के बंटवारे की मांगें होने लगीं। सरदार पटेल ने एक बार फिर अपनी आवाज़ जनता तक पहुंचाई और लोगों को किसी भी आधार पर देश का विभाजन न करने की सलाह दी। इस सम्बन्ध में आपका नागपुर का भाषण बड़े महत्त्व का था। आपके ही प्रभाव से कांग्रेस हाई कमान ने भाषा के आधार पर प्रांतों का बँटवारा

स्थगित करने का निश्चय कर लिया।

आपका दृढ़ विश्वास था कि देश को खण्डित करने का कोई भी काम देश को तबाह कर देगा। आप सम्पूर्ण भारत को एक महान राष्ट्र बनाना चाहते थे जो एशिया का ही नेतृत्व नहीं करेगा, वरन् संसार में शान्ति स्थापित करने में सहायक होगा।

स्वाधीनता मिलने के बाद आपको हवाई जहाज़ से दूर-दूर तक यात्रा करनी पड़ती थी। उस उम्र में हवाई जहाज़ की लम्बी यात्राओं का कष्ट उठाना आपकी आश्चर्यजनक सहनशक्ति को प्रकट करता है।

इन हवाई यात्राओं में एक यात्रा बड़े खतरे की थी। राजस्थान संघ का उद्घाटन करने के लिए आप दिल्ली से जयपुर जा रहे थे। रास्ते में जहाज़ का इंजन बिगड़ गया। चालक ने जहाज़ को एक नदी के किनारे रेतीले मैदान में उतार लिया। 4 घन्टे तक देश-भर में चिन्ता फैली रही। देश के सौभाग्य से आपको कोई चोट नहीं पहुंची। आपकी कुशलता के समाचार ने देश-भर में प्रसन्नता की लहर दौड़ा दी। पार्लियामेंट में सदस्यों ने आपकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना की और ईश्वर को धन्यवाद दिया। राजस्थान संघ का उद्घाटन करने के बाद आप जब नई दिल्ली आए और पार्लियामेंट में गए तो सदस्यों ने इतने उत्साह के साथ आपका स्वागत किया कि असेम्बली के इतिहास में आज तक किसी व्यक्ति का वैसा स्वागत नहीं किया गया। पार्लियामेंट की ओर से आपको एक

चांदी का हवाई जहाज़ भी भेंट किया गया।

सरदार पटेल 15 दिसम्बर, 1950 ई. को इस संसार से दिव्यलोक सिधार गए। उनके देहत्याग की खबर जंगल की आग की भांति देश और विदेश में फैल गई। सारा भारत शोक के समुद्र में डूब गया। सरकारी भवनों पर लहराते हुए राष्ट्रीय झण्डे झुक गए। देश-भर के सरकारी और गैर-सरकारी दफ्तर, स्कूल, कालेज, दुकानें और कारखाने बन्द हो गए। देश की पार्लियामेंट का चलता हुआ अधिवेशन रुक गया।

सरदार पटेल ने अपने युग की बड़ी-बड़ी घटनाओं में महत्त्वपूर्ण भाग लिया। भारत के इतिहास में उनका नाम सदा अमर रहेगा।

◆ ◆ ◆

सरल प्रेरणादायक जीवनियां

मेरा बचपन	महाराणा प्रताप	महापुरुषों का बचपन
झांसी की रानी	चाणक्य	वीर पुत्रियां
रवीन्द्रनाथ टैगोर	लोकमान्य तिलक	लालबहादुर शास्त्री
लाला लाजपतराय	श्रीकृष्ण	आदर्श बालक
सरदार पटेल	स्वामी विवेकानन्द	आदर्श देवियां
डॉ. राजेन्द्रप्रसाद	गोस्वामी तुलसीदास	सच्ची देवियां
विनोबा भावे	हमारे राष्ट्रनिर्माता	भारत के महान् ऋषि
जवाहरलाल नेहरू	मीराबाई	गौतम बुद्ध
महात्मा गांधी	गुरु तेगबहादुर	सम्राट् अशोक
चन्द्रशेखर आज़ाद	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	वीर हनुमान
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	सरदार भगतसिंह	हमारे स्वामी
गुरु नानकदेव	स्वामी रामतीर्थ	श्री अरविन्द
सुभाषचन्द्र बोस	गुरु गोविन्द सिंह	वीर सावरकर
शिवाजी	सदाचारी बच्चे	साहसी बालक

ISBN 81-7483-052-9
9788174830524

शिक्षा भारती
कश्मीरी गेट • दिल्ली

₹ 30/-